# प्रभावी अधिगम का एकमेव विकल्प
# अधिगम का सार्वभौमिक अभिकल्प

आद्या शक्ति राय*

*विद्यालय समाज का प्रतिबिंब होता है। समाज की विविधता कक्षा में परिलक्षित होती है। प्रत्येक कक्षा के विद्यार्थियों में विविधता/भिन्नता का होना स्वाभाविक है। विद्यार्थियों की यह विविधता स्वयं को कई तरीकों से प्रकट कर सकती है, जैसे — दृष्टि दिव्यांगता, श्रवण दिव्यांगता, शारीरिक या संवेदी दिव्यांगता, अधिगम अक्षमता, विविध शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक, भाषाई पृष्ठभूमि इत्यादि। अधिगम का सार्वभौमिक अभिकल्प एक ऐसा अभिकल्प प्रस्तुत करता है जिसके माध्यम से शिक्षक अपने शिक्षण में विविधता उत्पन्न करता है और विद्यार्थियों को उनके द्वारा किए जा सकने वाली कुछ अधिगम गतिविधियों में से अपना विकल्प चुनने का अवसर प्रदान करता है। इस लेख में अधिगम के सार्वभौमिक अभिकल्प के संप्रत्यय एवं सिद्धांतों की विवेचना की गई है। साथ ही अधिगम के सार्वभौमिक अभिकल्प का संक्षिप्त इतिहास एवं इसके प्रभावी अधिगम के लिए एकमेव विकल्प के रूप में इसकी सार्थकता प्रस्तुत की गई है।*

भारतीय संविधान हर प्रकार के विभेद का निषेध करते हुए प्रत्येक जाति, वर्ग, धर्म के लोगों को आर्थिक, लैंगिक क्षमताओं की विविधता के साथ गरिमामय जीवन जीने का अवसर देने हेतु प्रतिबद्धता सुनिश्चित करता है। अर्थात् एक समावेशी समाज की स्थापना करने की दिशा में एक आदर्श प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। यह स्थापित सत्य है कि समावेशी समाज की इमारत बिना समावेशी शिक्षा की नींव के तैयार नहीं की जा सकती, क्योंकि समावेशी समाज को जिस प्रकार के मनुष्य की दरकार है, वह समावेशी शिक्षा वाली कक्षाओं से ही उत्पन्न किए जा सकते हैं। ऐसा मनुष्य समाज की प्राकृतिक विविधता को सहजता से स्वीकार कर सकेगा, क्योंकि वह सामाजिक जीवन के प्रारंभ से ही इस विविधता को देखता, सुनता और समझता है। सीखने की प्रक्रिया और सामाजिक संबंधों के ताने-बाने एक-दूसरे से अन्योन्याश्रित संबंध रखते हैं। समावेशी शिक्षा व्यवस्था एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था की सिफ़ारिश करती है, जहाँ सभी बच्चे एक साथ बिना किसी भेदभाव के किसी भी स्थानीय विद्यालय में अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ शिक्षा ग्रहण कर सकें। जहाँ बच्चे को सामाजिक,

***एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, विशेष शिक्षा संकाय, डॉ शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश–226017

जातिगत, आर्थिक, वर्गीय, लैंगिक, शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से भिन्न देखे जाने के बजाय एक स्वतंत्र अधिगमकर्ता के रूप में स्वीकार किया जाता हो। समावेशी शिक्षा एक ऐसे विद्यालय की सिफ़ारिश करती है जिसमें सभी लोगों को समाविष्ट किया जा सके।

पिछले कुछ दशकों से समावेशन सबसे अधिक चर्चा में रहने वाला मुद्दा रहा है। शिक्षा के सभी हितधारकों ने इसकी आवश्यकता को बिना किसी झिझक के स्वीकार किया, परंतु साथ ही यह सभी के लिए चिंतन का विषय भी रहा कि इसको व्यावहारिक रूप कैसे प्रदान किया जाए जिससे इस आदर्श व्यवस्था को धरातल पर लाकर क्रियान्वित किया जा सके। आज भी यह समावेशी शिक्षा उस मुकाम पर नहीं पहुँच सकी है, जहाँ इसे पहुँचना चाहिए था।

एक सामान्य कक्षा में सभी विद्यार्थी भिन्न-भिन्न तरीकों से सीखते हैं। कुछ विद्यार्थी स्वयं से पढ़ के सीखने को प्राथमिकता देते हैं तो कुछ को लिखना पसंद होता है। कुछ विद्यार्थी अच्छे श्रोता होते हैं। कुछ अन्य तब सर्वश्रेष्ठ ढंग से सीखते हैं, जब वे अपने विचारों के बारे में समूह में चर्चा करते हैं तो कुछ अन्य अपने विचार निरूपित करने के लिए मस्तिष्क में विचार चित्रों को निर्मित करते हैं। समावेशी शिक्षा व्यवस्था में यह विविधता और व्यापक होती है। इसमें शिक्षार्थियों का एक बहुत विस्तृत विविधता वाला समूह होता है। यही प्रकृति इस व्यवस्था की सुंदरता भी है और चुनौती भी। जिसके परिणामस्वरूप शिक्षक को शिक्षण के एक ऐसे उपागम की आवश्यकता है जिससे विद्यार्थियों की विविध शैक्षिक आवश्यकताओं की विस्तृत शृंखला की पूर्ति हो सके। सभी प्रकार के विद्यार्थियों को अपने शिक्षण कार्य से लाभान्वित करने के लिए आवश्यक है कि शिक्षक इस विविधता को पहचानें और उन सबकी शैक्षिक एवं अन्य संबंधित आवश्यकता की पूर्ति हेतु शिक्षण के किसी सार्वभौमिक अभिकल्प को अपने शिक्षण में शामिल कर सकें।

## अधिगम का सार्वभौमिक अभिकल्प क्या है?

विद्यालय, संस्कृति और समाज की विविधता को कक्षा में प्रतिबिंबित करता है। सामान्यतः विद्यालय द्वारा आयोजित गतिविधियों में सभी को हिस्सेदारी एवं प्रदर्शन का अवसर दे पाना शिक्षक के सामने सबसे बड़ी चुनौती है। अधिगम का सार्वभौमिक अभिकल्प सभी बच्चों की विशिष्ट क्षमताओं की अद्वितीयता को पहचानकर उसके अनुसार लचीली संरचना की शृंखला प्रस्तुत करता है। समावेशी कक्षा में किसी एक विधि द्वारा सभी विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं की जा सकती है, इसलिए प्रभावी शिक्षण-अधिगम के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु बहुआयामी विधि का प्रयोग करना होगा। अधिगम का सार्वभौमिक अभिकल्प शिक्षण-अधिगम हेतु बहुआयामी विधियों को प्रस्तुत करता है। यह सिर्फ़ विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए ही विशिष्ट तकनीक नहीं है, बल्कि यह सभी विद्यार्थियों के अधिगम को बढ़ाने में सहायक है। नेशनल सेंटर ऑन यूनिवर्सल डिज़ाइन फ़ॉर लर्निंग (2016) के अनुसार, 'अधिगम का सार्वभौमिक अभिकल्प' (यूनिवर्सल डिज़ाइन फ़ॉर लर्निंग—यू.डी.एल.) ऐसे अनुदेशन लक्ष्यों, विधियों, सामग्रियों और आकलनों को सृजित करने के लिए

एक ब्लू प्रिंट प्रदान करता है जो सभी के लिए उपयोगी है। यह एक लचीला उपागम है जिसको सभी की व्यक्तिगत ज़रूरतों के अनुसार अनुकूलित और समायोजित किया जा सकता है।'

'अधिगम का सार्वभौमिक अभिकल्प' सभी विद्यार्थियों को सीखने एवं अनुदेशन लक्ष्यों, विधियों, सामग्रियों और आकलनों को सृजित करने का समान अवसर प्रदान करता है, जो प्रत्येक विद्यार्थी की उसके संपूर्ण अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सहायक हो। यह एक लचीला दृष्टिकोण प्रदान करता है जिसे व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप अनुकूलित और समायोजित किया जा सकता है। यू.डी.एल. के क्रियान्वयन से सभी विद्यार्थियों को सामान्य शिक्षा प्रणाली में पहुँचने, भाग लेने और प्रगति करने का मौका मिलता है। यू.डी.एल. के पीछे विचार यह है कि सीखने के वातावरण को इस तरह के लचीलेपन के साथ डिज़ाइन किया जाना चाहिए कि व्यापक रूप से भिन्न क्षमताओं के विद्यार्थियों के पास उपलब्ध विकल्पों की एक शृंखला हो, जिससे सभी विद्यार्थी एक ही कार्यक्रम से लाभ उठा सकें। अनुदेशन का यू.डी.एल. उपागम विभिन्न अधिगम शैलियों को समायोजित करते हुए शिक्षार्थियों को संज्ञानात्मक समर्थन प्रदान करने के साथ मूल्यांकन के वैकल्पिक रूप प्रदान करता है। यू.डी.एल. अधिगम की बाधाओं को संबोधित कर बाधामुक्त अधिगम प्रदान करने का एक ढाँचा है। संयुक्त राज्य अमेरिका के उच्च शिक्षा अवसर अधिनियम (एच.ई.ओ.ए.), 2008 ने यू.डी.एल. की एक संक्षिप्त रूप से परिभाषा दी है, जिसके अनुसार अधिगम के यूनिवर्सल डिज़ाइन शब्द का अर्थ शैक्षणिक अभ्यास के मार्गदर्शन के लिए वैज्ञानिक रूप से वैध रूपरेखा है—

1. यह सूचनाओं के प्रस्तुतिकरण, ज्ञान और कौशल प्रदर्शित करने के तरीकों या उत्तर देने के तरीकों में, विद्यार्थियों को अधिगम में संलग्नता के तरीकों में लचीलापन प्रदान करता है।
2. यह निर्देश में बाधाओं को कम करता है, उचित समन्वयन/संयोजन, समर्थन और चुनौतियों का सामना करने के लिए आधार प्रदान करता है, सभी विद्यार्थियों के लिए उच्च उपलब्धि अपेक्षाओं को बनाए रखता है और विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों तथा सीमित अंग्रेज़ी की दक्षता रखने वाले विद्यार्थियों को भी समाहित करता है

उपरोक्त चर्चा के दृष्टिगत यू.डी.एल. का मुख्य लक्ष्य सभी विद्यार्थियों के लिए पाठ्यचर्या को सुगम बनाना तथा सभी के लिए सुगम वातावरण का निर्माण करने हेतु शिक्षकों को सहायता प्रदान करना है। इस विषय-वस्तु के प्रस्तुतिकरण की ऐसी कोई एक विधि नहीं है, जो सभी विद्यार्थियों तक एकसमान रूप से पहुँच सके। इसके लिए अधिगम क्रियाओं एवं सामग्रियों को लचीला तथा सीखने के सभी संभव तरीकों को करने हेतु डिज़ाइन एवं पुनः डिज़ाइन करना होगा।

## अधिगम का सार्वभौमिक अभिकल्प— संक्षिप्त इतिहास

अधिगम के सार्वभौमिक अभिकल्प का प्रादुर्भाव 'सार्वभौमिक अभिकल्प' के सिद्धांतों से हुआ है, इसका प्रारंभ 'आर्किटेक्चर' के क्षेत्र में हुआ था।

क्योंकि आर्किटेक्ट्स और इंजीनियरों ने महसूस किया था कि इमारतों के डिज़ाइन एवं निर्माण के कई ढाँचे और वातावरण को आबादी का बड़ा हिस्सा उपयोग नहीं कर पा रहा। समाज के वर्ग विशेष के कुछ व्यक्तियों द्वारा अनुभव की गई वातावरणीय सीमाओं को जब महसूस किया जाने लगा, तब यह विचार किया गया कि कुछ लोगों को दरवाज़े खोलने, स्विच तक पहुँचने, प्रतीक्षालय या किसी अन्य इमारती हिस्सों तक पहुँचने में कठिनाई होती है। सभी के लिए इमारतों तक पहुँच को सुनिश्चित करके व्यक्तियों के बीच असमानता में सुधार करने के प्रयास से सार्वभौमिक अभिकल्प के संप्रत्यय की परिकल्पना अस्तित्व में आई। लेकिन यह देखा गया कि इमारतों के निर्माण के पश्चात् या पहले से निर्मित इमारतों को सभी के लिए सुलभ बनाने के प्रयास में यह अत्यधिक खर्चीला, मूल डिज़ाइन के सौंदर्य से दूर तथा अकसर अव्यावहारिक होता है। यू.डी.एल. ने शुरुआत से ही ऐसी संरचनाएँ बनाने की आवश्यकता को पहचाना जो सभी लोगों के लिए उपयोगी एवं सुगम्य हो।

रोज़ और मेयर (2000) ने उल्लिखित किया कि यह आंदोलन इस विचार से गतिमान हुआ कि शुरुआत से ही इमारतों को सभी के लिए सुलभ बनाया जाना चाहिए। 'सार्वभौमिक अभिकल्प' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम रॉन मैस द्वारा किया गया। वास्तुकला के क्षेत्र में वास्तुकारों ने एक और अधिक लागत प्रभावी रणनीति का सुझाव दिया कि भवनों को लचीला यूनिवर्सल डिज़ाइन सिद्धांतों के आधार पर डिज़ाइन किया जाए ताकि सभी उपयोगकर्ताओं तक पहुँच हो सके। तकनीकी प्रगति के अंतर्गत 'डिजिटलाइज़्ड टेक्स्ट' ने अध्ययन के लिए सिर्फ़ टेक्स्ट के स्थान पर अधिगम सामग्री के बहुत सारे विकल्प प्रस्तुत किए सीखने की प्रक्रिया में मस्तिष्क की संलग्नता पर अनुसंधान में पाया गया कि जब व्यक्ति सीखने के कार्यों में व्यस्त रहता है, जैसे—पढ़ना, लिखना इत्यादि तब सीखने के दौरान मस्तिष्क में तीन नेटवर्क कार्य करते हैं—अभिज्ञान/परिज्ञान नेटवर्क (रिकॉग्निशन नेटवर्क) ("क्या" सीखना), सामरिक/रणनीति नेटवर्क (स्ट्रेटेजिक नेटवर्क) ("कैसे" सीखना) और भावनात्मक नेटवर्क (अफ़ैक्टिव नेटवर्क) ("क्यों" सीखना)। सेंटर फ़ॉर एप्लाइड स्पेशल टेक्नोलॉजीज़ (सी.ए.एस.टी.) ने कहा कि तीन वैचारिक बदलावों—वास्तुशिल्प डिज़ाइन में प्रगति, शिक्षा प्रौद्योगिकी में विकास और मस्तिष्क अनुसंधान से खोजों के परिणामस्वरूप यू.डी.एल. अस्तित्व में आया।

## अधिगम के सार्वभौमिक अभिकल्प के सिद्धांत

न्यूरोसाइंस का सुझाव है कि अधिगम में व्यक्तियों की आवश्यकताएँ व्यक्तियों के फ़िंगरप्रिंट के जैसे ही भिन्न होती हैं। दूसरे शब्दों में, हम सभी अद्वितीय हैं। अधिगम की प्रक्रिया में मस्तिष्क के तीन नेटवर्क कार्य करते हैं। अधिगम का सार्वभौमिक अभिकल्प न्यूरोसाइंस पर निर्भर है और तीन मुख्य मस्तिष्क नेटवर्क पर केंद्रित हैं। पहचान नेटवर्क का सरोकार "क्या" से है, जिसका आशय है हम क्या सीखते हैं। इसके साथ ही हम जो सुनते हैं, देखते हैं और पढ़ते हैं, उन तथ्यों को कैसे एकत्रित और वर्गीकृत करते हैं। इसके अलावा, यह वर्णों और शब्दों की पहचान करता है। इस नेटवर्क के अनुरूप, शिक्षकों

को विभिन्न तरीकों से सूचना और सामग्री प्रस्तुत करनी चाहिए (प्रस्तुतिकरण के विविध साधन)। यह नेटवर्क "क्या" सीखने से संबंधित है।

सामरिक नेटवर्क हम "कैसे" सीखते हैं, में संलग्न रहता है। यह नेटवर्क कार्य की योजना बनाता है और कार्य को संम्पन्न करने के साथ विचारों को व्यवस्थित और अभिव्यक्त कैसे करते हैं, बताता है। इसमें शिक्षकों को उन तरीकों को अपनाना चाहिए जिससे विद्यार्थी उन बातों को प्रदर्शित कर सकें जो वह जानते हैं (कार्रवाई और अभिव्यक्ति के कई साधन)। भावात्मक नेटवर्क हम "क्यों" सीखते हैं, से संबंधित है। विद्यार्थी कैसे कार्य में संलग्न हो जाते हैं और उनसे प्रेरित होते हैं, साथ ही उन्हें कैसे चुनौती दी जाती है, ये सब भावात्मक नेटवर्क में आते हैं। यह नेटवर्क विद्यार्थियों के गुणों, कमज़ोरियों और अधिगम की बाधाओं को कैसे समाप्त किया जाए, के साथ लचीली सामग्री और विधियों के लिए एक ढाँचा निर्धारित करने का प्रयास करता है। यू.डी.एल. के तीन सिद्धांतों में विद्यार्थियों के लिए निर्देश हेतु अनुदेशन, विद्यार्थियों को अधिगम के विकल्पों की विस्तृत शृंखला प्रदान करने की एक सामान्य सिफ़ारिश है (रोज़, 2001)। प्रत्येक विद्यार्थी की भिन्नता को ध्यान में रखते हुए मस्तिष्क के सीखने के तीनों नेटवर्क को सम्मिलित करके समस्त शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की गतिविधियों की योजना बनाई जा सकती है। यू.डी.एल. के ये तीनों सिद्धांत अधिगम की बाधाओं की पहचान करके इन बाधाओं को हटाने का अवसर प्रदान करते हैं (रालाबेट, 2011)।

अधिगम के सार्वभौमिक अभिकल्प के तीन सिद्धांतों का विवरण अग्रलिखित है—

- **प्रतिनिधित्व के विविध साधन**— यह विद्यार्थी को सीखने के लिए अध्ययन सामग्रियों को विविध रूपों में विद्यार्थी के समक्ष प्रस्तुत करता है। प्रतिनिधित्व के कई साधन हैं, जिन्हें हम देखते और पहचानते हैं। विभिन्न प्रकार की सामग्रियों और जानकारी के तरीके से आधारभूत ज्ञान विकसित करते हैं। दृश्य मचान, ऑडियो, एम्बेडेड समर्थन, वीडियो, चित्रण, एनिमेशन, इंटरैक्टिव जाल या इसी तरह के घटक सीखने वाले के लिए सामग्री का संदर्भ देते हैं। ये चर्चा, रीडिंग, डिजिटल टेक्स्ट्स, ब्रेल लिपि, सांकेतिक भाषा और मल्टीमीडिया प्रस्तुतियों जैसे कई चैनलों के माध्यम से सामग्री प्रदान करते हैं।
- **कार्यवाही और अभिव्यक्ति के कई और साधन**— यह सीखने के रणनीतिक तरीकों अर्थात् हम कैसे सीखते हैं की अभिव्यक्ति से संबंधित है। यह विद्यार्थियों को सीखे हुए ज्ञान और कौशल को विविध माध्यमों से प्रदर्शन करने का साधन उपलब्ध कराता है, जिससे वे अपनी सुविधानुसार अपने सीखे हुए ज्ञान को प्रदर्शित कर सकें। इसका उद्देश्य आकलन कर पारंपरिक परीक्षणों के साथ-साथ, मल्टीमीडिया प्रस्तुतियों और डिजिटल रिकॉर्डिंग, चित्र, स्टोरीबोर्ड, प्रस्तुतिकरण, मल्टीमीडिया, ब्रेल, सांकेतिक भाषा इत्यादि के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी समझ का प्रदर्शन करने के अवसर प्रदान करता है।
- **संलग्नता के विविध साधन**— यह अधिगम के भावनात्मक नेटवर्क यानी हम क्यों सीखते हैं, का समर्थन करता है। प्रभावशाली अधिगम हेतु

विद्यार्थियों को अधिगम प्रक्रिया में कैसे संलग्न रखा जाए, के विविध तरीकों की सिफ़ारिश करता है। अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थी को लगाए रखने के लिए सहयोगी अधिगम, सिमुलेशन और वास्तविक एवं आभासी पर्यटन जैसी गतिविधियों के माध्यम से सीखने में विद्यार्थियों को कैसे शामिल किया जाए, से संबंधित है। ये गतिविधियाँ सीखने के अनुभव और निर्देश प्रक्रिया के साथ सहभागिता और बातचीत को बढ़ावा देती हैं तथा विद्यार्थियों को सक्रिय सहभागिता के साथ सीखने हेतु आत्मनिर्णय लेने के अवसर देती हैं।

## प्रभावी अधिगम हेतु अधिगम का सार्वभौमिक अभिकल्प कैसे सहायक है?

अधिगम का सार्वभौमिक अभिकल्प अधिगम को प्रभावी बनाने में कैसे सहायक है? यह जानने से पूर्व हम इस प्रश्न पर विचार करते हैं कि क्या शिक्षक, विशेष आवश्यकता वाले और कक्षा में उपस्थित अन्य विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर अपने पाठ को डिज़ाइन करते हैं या फिर पाठ की योजना तैयार कर लेते हैं और फिर उसमें इन विद्यार्थियों के समक्ष सीखने के दौरान आने वाली बाधाओं को समायोजित करते हैं? उदाहरण के लिए, शिक्षक सामान्य पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधियों को दृष्टि दिव्यांग, श्रवण दिव्यांग, अन्य दिव्यांग विद्यार्थियों तथा भाषाई विविधता इत्यादि वाले विद्यार्थियों के अधिगम के लिए थोड़ा बहुत समायोजन करने का प्रयास करता है। इस प्रक्रिया में वह सहायक प्रौद्योगिकियों के संयोजन के माध्यम से अवधारणाओं तक विद्यार्थियों की पहुँच सुनिश्चित करने का प्रयास करता है।

प्रत्येक कक्षा में विद्यार्थियों में भिन्नता का होना एक स्वाभाविक तथ्य है। यह विविधता कई रूपों में मौजूद रहती है, जैसे — विद्यार्थी की पृष्ठभूमि, उनकी क्षमताओं — शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक इत्यादि, सांस्कृतिक और भाषाई रूप से विविध विद्यार्थी कक्षा में विभिन्न ज्ञान के आधार और अनुभव के साथ आते हैं। एक शिक्षक के सामने यह विविधता कई रूपों में आती है और सभी विद्यार्थियों पर लागू होती है तथा इसमें विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विशेषताएँ भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती हैं। जैसा कि काण्डपाल (2012) ने उल्लिखित किया है कि, ''वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हम सभी विद्यालयों को एक ऐसे रूप में परिलक्षित कर रहे हैं जहाँ पर बच्चे की विभिन्नताओं (शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक, लैंगिक आदि) के होते हुए भी उन्हें सभी के साथ मिलकर ज्ञान सृजन करने के समान अवसर मिल सकें। उनकी वैयक्तिक आवश्यकताओं के अनुरूप उन्हें कक्षा-कक्ष में उचित वातावरण मिल सके ताकि वे आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, सकारात्मक सोच, प्रभावी संप्रेषण आदि गुणों को स्वयं में विकसित करते हुए संपूर्ण व्यक्तित्व विकास की ओर अग्रसर हो सकें।'' विद्यार्थियों की यह विभिन्नता उनके विद्यालयी अनुभव एवं अधिगम को प्रभावित करती है। विद्यार्थी विभिन्न तरीकों से सूचनाओं को संसाधित करते हैं और विभिन्न गतियों से काम करते हैं। उनके कार्यों को पूरा करने के दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न होते हैं। समावेशी शिक्षा कक्षा में

उपस्थित ऐसी ही विविधता को सम्बोधित करने की प्रक्रिया है, जो पारम्परिक शिक्षा व्यवस्था में ढाँचागत परिवर्तन करने पर बल देती है। यह एक ऐसी प्रणाली विकसित करने की बात करती है, जिसमें सभी शिक्षार्थियों को बिना किसी भेदभाव के अधिगम के समान अवसर प्राप्त हों।

समावेशी प्रकृति की कक्षा में एकल विधि या सामग्री, जो सभी के लिए उपयुक्त हो, कारगर नहीं होगी, बल्कि आवश्यकता होगी एक लचीले दृष्टिकोण और उपागम की, जिसे प्रत्येक विद्यार्थी की व्यक्तिगत ज़रूरतों के अनुसार अनुकूलित और समायोजित किया जा सके। अधिगम का सार्वभौमिक अभिकल्प एक ऐसा ही उपागम है जो सभी प्रकार के शिक्षार्थियों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप सीखने की संपूर्ण प्रक्रिया प्रदान करता है। इसको व्यावहारिक रूप से इस तरह से समझा जा सकता है कि बच्चे जब हरी सब्ज़ियाँ नहीं खाते तो माताएँ उनको दूसरे प्रकार से बनाकर खिला देती हैं, क्योंकि वह उनके स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं और उन्हें दूसरे रूप में उनके सामने प्रस्तुत करने पर वो आसानी से खा लेते हैं। उदाहरणस्वरूप, बच्चा पालक नहीं खाता तो माँ पालक को आटा में गूँथकर पूड़ी या पराठा के माध्यम से खिला देती है। ठीक उसी प्रकार शिक्षक, अधिगम के सार्वभौमिक अभिकल्प के माध्यम से बच्चों को पाठ्यचर्या को विविध रूपों में उनके सामने प्रस्तुत करके, अधिगम प्रक्रिया में उनको विविध तरीकों से संलग्न करके एवं उनके आकलन एवं मूल्याकंन में विविधता को अपनाकर, उनके अधिगम को प्रभावी बनाते हैं। यह सभी विद्यार्थियों के लिए समान अनुदेशन लक्ष्यों, विधियों, सामग्रियों और आकलनों हेतु समान अवसर प्रदान करता है। यह एक लचीला दृष्टिकोण प्रदान करता है, जिसे व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए अनुकूलित और समायोजित किया जा सकता है। यू.डी.एल. के कार्यान्वयन से सभी विद्यार्थियों को सामान्य शिक्षा प्रणाली में पहुँचने, भाग लेने और प्रगति करने का मौका मिलता है।

अधिगम के सार्वभौमिक अभिकल्प के सिद्धांत शिक्षकों को मौका देते हैं कि वे एक लचीली पाठ्यचर्या तैयार करें, जो सभी विद्यार्थियों के लिए सीखने की सुविधा प्रदान करे। सीखने के लिए यूनिवर्सल डिज़ाइन में 'सार्वभौमिक' हर किसी के लिए एक समाधान नहीं दर्शाता है, बल्कि यह अंतर्निहित रूप से लचीली, अनुकूलन योग्य सामग्री, असाइनमेंट और गतिविधियों की आवश्यकता को रेखांकित करता है। लचीलापन दो कारणों से आवश्यक है— (i) शिक्षार्थियों के बीच व्यक्तिगत भेद और (ii) निर्देशक मीडिया के बीच मतभेद। यू.डी.एल. विकल्पों को प्रदान करके व्यक्तिगत ज़रूरतों को पूरा करने का लक्ष्य प्राप्त करता है, न कि सभी के लिए एक समाधान प्रस्तुत करके। मस्तिष्क आधारित शिक्षण सिद्धांतों, अनुसंधान आधारित सर्वोत्तम अभ्यासों और अनुदेशन प्रौद्योगिकियों को एकीकृत करके, यू.डी.एल. के अंतर्निहित सिद्धांत सभी विद्यार्थियों के लिए सीखने के तरीके के बारे में शक्तिशाली अनुप्रयोग प्रदान करते हैं। रोज़, मेयर, स्ट्रैंगमैन और रैपॉल्ट (2002) के अनुसार यू.डी.एल. लचीली शिक्षा और उपकरणों के माध्यम से मानक-आधारित वातावरण में अधिगम को वैयक्तिक बनाने के लिए एक ढाँचा प्रदान करता है।

यह शिक्षकों को कक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी को शामिल करने के लिए अनुदेशन विधियों और सामग्रियों में लचीलापन लाकर समायोजित करने के तरीके प्रस्तुत करता है। शिक्षण के पारंपरिक दृष्टिकोण, शिक्षण विधियों और उपकरणों में इस प्रकार का लचीलापन पूरी तरह से असंभव प्रतीत होता है। मस्तिष्क अनुसंधान और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में मीडिया के प्रयोग से प्राप्त दृष्टिकोणों के साथ, यू.डी.एल. शिक्षकों को कक्षा में लचीलापन प्रयोग करने के लिए एक व्यावहारिक रूपरेखा प्रदान करता है।

## निष्कर्ष

कक्षा में बच्चे बहुत सारी विविधताओं के साथ उपस्थित होते हैं। लचीलापन अधिगम के सार्वभौमिक अभिकल्प का सार है। लचीलेपन में सभी विद्यार्थियों के लिए सीखने के अवसरों को अधिकतम करने की क्षमता हो सकती है। सार्वभौमिक अभिकल्प व्यक्तियों की एक विस्तृत शृंखला के लिए जीवन की बेहतर गुणवत्ता विकसित करने की क्षमता को बढ़ाता है। सार्वभौमिक अभिकल्प पूरी तरह से कार्यात्मक सीमाओं के साथ और समाज को भी लाभ देता है। यह लोगों को अधिक आत्मनिर्भर और सामाजिक रूप से योगदान देने में सहायता करता है। सीखने के लिए सार्वभौमिक अभिकल्प (यू.डी.एल.) का उपयोग भौतिक, प्रभावशाली या संज्ञानात्मक बाधाओं पर काबू पाने के साथ पाठ्यचर्या को वितरित करने के लिए किया जा सकता है।

## संदर्भ


उच्च शिक्षा अवसर अधिनियम, 2008. https://www.govinfo.gov/content/pkg/PLAW-110publ315.pdf से लिया गया है.

एडीबर्न, डी.एल. 2010. वुड यू लाइक रिकॉग्नाइज़ यूनिवर्सल डिज़ाइन फ़ॉर लर्निंग इफ़ यू सॉ इट? टेन प्रोपोज़िशन्स फ़ॉर न्यू डायरेक्शन्स फ़ॉर द सेकंड डिकेड ऑफ़ यू.डी.एल. *लर्निंग डिसएबिलिटी क्वार्टर्ली*. 33(1), पृ. 33–41.

काण्डपाल, केवलानन्द. 2012. शिक्षा में समावेशन — चुनौतियाँ एवं समाधान. *टीचर्स ऑफ़ इंडिया*. http://www.teachersofindia.org/hi/article/ से लिया गया है.

नेशनल सेंटर ऑन यूनिवर्सल डिज़ाइन फ़ॉर लर्निंग. https://www.ndss.org/advocate/ndss-legistlative-agenda/education/universal-design-for-learning-ude/ से लिया गया है.

रालाबेंट, पी. के. 2011. यूनिवर्सल डिज़ाइन फ़ॉर लर्निंग सेंटर – मीटिंग द नीड्स ऑफ़ ऑल स्टूडेंटस. द *आशा लीडर (ASHA Leader)*. इश्यू 16 (10), पृ 14–17.

रोज़, डी.एच. और ए. मेयर. 2000. यूनिवर्सल डिज़ाइन फ़ॉर लर्निंग. *जर्नल ऑफ़ स्पेशल एजुकेशन टेक्नॉलोजी*. असोसिएशन एडिटर कॉलम. 15 (1). http://jset.unlv.edu/15.1/asseds/rose.html से लिया गया है.

रोज़, डी. 2001. यूनिवर्सल डिज़ाइन फ़ॉर लर्निंग — डिरायविंग गाईडिंग प्रिंसिपल्स फ़्रॉम नेटवर्क्स दैट लर्न. *जर्नल ऑफ़ स्पेशल एजुकेशन टैक्नॉलोजी*. 16 (1). http://jset.unlv.edu/16.2/asseds/rose.html से लिया गया है.

रोज़, डी.एच., ए. मेयर, एन. स्ट्रेंगमैन. और जी. रैपॉल्ट. 2002. टीचिंग एव्री स्टूडेंट इन द डिजिटल एज. *यूनिवर्सल डिज़ाइन फ़ॉर लर्निंग*. असोसिएशन फ़ॉर सुपरविज़न एंड करीकुलम डेवलपमेंट, यू.एस.ए.